IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, July 2024

स्वामी विवेकानंद का प्रबंधकीय नेतृत्व दर्शन:मानवीय मूल्य आधारित परिप्रेक्ष्य

डॉ. प्रशांत कुमार
सह आचार्य, व्यावसायिक प्रशासन विभाग
राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरू (राजस्थान)

शोध सार

प्रस्तुत शोधपत्र स्वामी विवेकानंद के प्रबंधकीय नेतृत्व के मानवीय मूल्यों पर आधारित परिप्रेक्ष्य को प्रकट करता है। शोध पत्र का उद्देश्य स्वामी विवेकानंद के विचारों का प्रबंधकीय नेतृत्व की दृष्टि से भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित चिन्तन का तर्कसंगत विश्लेषण करना है। स्वामी विवेकानन्द के प्रबंधकीय चिन्तन का आधार भारतीय शैक्षिक चिन्तन परंपरा, आध्यात्मिकता और मानवीय मूल्यों की स्थापना करना रहा है। स्वामीजी का प्रबंधकीय नेतृत्व समाज सेवा, आध्यात्मिक उन्नति, मनोबल निर्माण और वैज्ञानिकता के सहज समन्वय पर आधारित है। प्रस्तुत शोध पत्र में ऐतिहासिक अनुसंधान विधि के आधार पर शैक्षिक दर्शन में भारतीय जीवन पद्धति, ज्ञान विज्ञान की साधना, परंपरा और आधुनिकता के मध्य समन्वय को लक्षित कर विभिन्न दृष्टान्तो के माध्यम से प्रबंधकीय नेतृत्व की दृष्टि से जीवन मूल्यों का विकास कर भारतीय संस्कृति के उत्थान पर बल दिया गया है। निष्कर्षतः स्वामी विवेकानंद का जीवन दर्शन आधुनिक प्रबंधकों को भावनात्मक बुद्धिमता का विकास करने, संगठनात्मक विकास करने, प्रबंधकीय नेतृत्व कौशल निर्माण एवं मानवीय मूल्यों का विकास करने के लिए विभिन्न आयाम प्रस्तुत करता है।

बीज शब्दः प्रबंधन, नेतृत्व, व्यक्तित्व, मूल्य , शक्ति, संगठनात्मक विकास, भावनात्मक बुद्धिमता।

प्रस्तावना

"एक विचार लें। उस एक विचार को अपना जीवन बना लें - उसके बारे में सोचें, उसके सपने देखें, उस विचार पर जिएँ। मस्तिष्क, मांसपेशियों, नसों, शरीर के हर हिस्से को उस विचार से भर दें और हर दूसरे विचार को अकेला छोड़ दें। यही सफलता का रास्ता है।" - स्वामी विवेकानंद

प्रबंधकीय चिन्तन के विकास, प्रबंधकीय नेतृत्व क्षमता के विकास और प्रबंधकीय समस्याओं के समाधान की दृष्टि से समस्याओं का अध्ययन कर समाधान मूलक चिन्तन का विकास करना महत्वपूर्ण होता है। भारतीय शिक्षा के विकास और शैक्षिक अवदान की दृष्टि से मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना भारतीय लोक परंपरा एवं संस्कृति का मूल उद्देश्य रहा है। सन् 1895 में लंदन प्रवास के समय स्वामी विवेकानंद को व्याख्यान देने के लिए जाना था। इस प्रवास के समय उनके साथ स्वामी शारदानंद भी साथ थे। यद्यपि स्वामी विवेकानंद को व्याख्यान देना था किन्तु उन्होंने स्वामी शारदानंद को व्याख्यान देने के लिए मंच पर उनका नाम प्रस्तावित कर दिया। स्वामी विवेकानंद ने स्वामी शारदानंद का आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए यह किया था। स्वामी विवेकानंद का नेतृत्व कौशल और प्रबंधकीय चिन्तन प्रेरणाओं

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, July 2024

पर आधारित था। इसी प्रकार से स्वामी विवेकानंद अपने साथ रहने वाले साधकों, सहकर्मियों का मनोबल भी समय-समय पर बढाते रहते थे। स्वामी विवेकानंद अपने संगी साथियों को अपनी इच्छाओं, लक्ष्यों एवं प्रयासों से अवगत कराने के बाद उच्च स्तरीय निष्पादन मानकों को निर्धारित कर देते थे। सुझबुझ के धनी नेता अपने अनुगामियों का मनोबल बढ़ाने, उन्हें सशक्त करने, प्रशिक्षित करने का काम निरंतर करते हैं।स्वामी विवेकानंद के अनुसार व्यक्तित्व के विकास की अवधारणा का संबंध सामाजिक भिन्नताओं, बौद्धिक और नैतिक नवाचारों तथा ग्रहण की गई शिक्षा से है। (**त्रिवेदी, 2017)** यह शोधपत्र स्वामी विवेकानंद के चिन्तन का आधुनिक प्रबंध, नेतृत्व क्षमता विकसित करने और संगठन के प्रति भावनात्मक जुड़ाव की ओर उन्मुखीकरण पर केंद्रित है। विश्व इतिहास के महान नेताओं में सम्मिलित स्वामी विवेकानंद का यह करिश्माई व्यक्तित्व है जो पीढ़ियों से प्रभावित कर रहा है। नेतृत्व की दृष्टि से व्यक्तित्व मनुष्य की इच्छा शक्ति से संबंधित है। आज व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से व्यवहार विज्ञान मानव संसाधन विकास हेतु महत्वपूर्ण है। प्रबंधन गुरुओं और शोधकर्ताओं को विवेकानंद के दृष्टिकोण को समझना चाहिए। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने स्वामी विवेकानंद के लिए यह कहा था कि "यदि आप भारत को जानना चाहते हैं तो विवेकानन्द को पढ़िये। उनमें आप सब कुछ सकारात्मक ही पायेंगे, नकारात्मक कुछ भी नहीं।"

स्वामी विवेकानंद का संक्षिप्त जीवन परिचय :

स्वामी विवेकानंद का जन्म **12 जनवरी, 1863** को मकर संक्रान्ति के दिन कलकत्ता में कायस्थ परिवार में हुआ था। बाल्यकाल में उनका नाम वीरेश्वर रखा गया। विवेकानंद का मूल नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। स्वामी विवेकानंद के पिता का नाम विश्वनाथ दत्त एवं माता का नाम भूवनेश्वरी देवी था। स्वामी विवेकानंद के पिताजी कलकत्ता उच्च न्यायालय में विख्यात अधिवक्ता का काम करते थे। उच्च शिक्षा के दौरान स्वामी विवेकानंद स्वामी रामकृष्ण परमहंस के संपर्क में आये। इसके बाद स्वामी विवेकानंद द्वारा रामकृष्ण मिशन के माध्यम से संपूर्ण विश्व में आध्यात्मिक नेतृत्व की विचारधारा को बल प्रदान किया गया। उनके घर का नाम नरेन्द्र नाथ था। उनके पिता विश्वनाथ दत्त पाश्चात्य सभ्यता में विश्वास रखते थे। ये अपने पुत्र नरेन्द्र को भी अंग्रेजी पढ़ाकर पाशचात्य सभ्यता के अनुसार चलाना चाहते थे। रामकृष्ण परमहंस की प्रशंसा सुनकर नरेंद्र उनके पास पहले तो तर्क करने के विचार से ही गए थे किन्तु रामकृष्ण परमहंस जी ने नरेंद्र की प्रचंड प्रतिभा को पहचान लिया कि में जिस शिष्य का इंतजार कर रहा हूं वह तो यही है। पारिवारिक जीवन से सन्यास लेने के बाद इनका नाम विवेकानंद रखा गया। स्वामी विवेकानंद ने 04 जुलाई 1902 को बेलूर मठ के एक शांत कमरे में महासमाधि ली थी। महासमाधि के समय उनकी उम्र 39 साल 05 माह और 24 दिन थी।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, July 2024

साहित्यावलोकन

• **त्रिवेदी, राजेश्वरी (2009)** ने 'सोशियल चेंज इन इंडियन सोसायटी विद रेफरेंस टू द कंट्रीब्यूशन ऑफ स्वामी विवेकानंद' पर अध्ययन में स्पष्ट किया है कि भारतीय कर्मचारियों की व्यावसायिक दक्षता और संगठनात्मक कुशलता वृद्धि हेतु सहकारी प्रयास तथा सामाजिक जागरूकता के मूल्यों में वृद्धि हेतु उन्हें मूल्यों पर केंद्रित अभिप्रेरित किया जाना चाहिए। (त्रिवेदी,2009)

• **मोहता, सत्यप्रकाश (2012)** ने 'स्वामी विवेकानंद के नव्य वेदान्त दर्शन एवं उनके शैक्षिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता' में स्पष्ट किया है कि मानवीय आत्मबोध को वर्तमान शैक्षिक प्रणाली का अंग बनाना अतिआवश्यक है। इससे मानवीय अस्मिता और मूल्यों पर आधारित सामाजिक प्रतिबद्धता में वृद्धि होती है। (मोहता, 2012)

• **राजपूत, प्रमोद कुमार एवं उनियाल, मदन मोहन (2016)** ने 'स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता' में स्पष्ट किया है कि सामाजिक एवं आर्थिक कल्याण के लिए वेद तथा गीता दर्शन जीवन का आधार है। संपूर्ण विश्व में जनमानस को इसका अनुसरण करने की प्रेरणा दी जानी चाहिए। (राजपूत उनियाल, 2016)

• **राज, अनुज एवं सजावन, दीप्ति (2017)** ने'स्वामी विवेकानंद का मानव निर्माणकारी शैक्षिक दृष्टिकोण' लेख में कहा है कि स्वामी विवेकानंद जी के विचार वर्तमान पीढ़ी हेतु और भी उपयोगी हैं क्योंकि पाश्चात्य विचारों के कारण सामाजिक सरोकार एवं मानवीय जीविकोपार्जन कठिन हो रहा है। इन विषम परिस्थितियों में स्वामी विवेकानंद का जीवन दर्शन नई पीढ़ी में उत्साह का समावेश करने में सक्षम है। (राज एवं सजावन, 2017)

• **बलवान, प्रकाश (2012)** ने' विवेकानंद थॉट्स ऑन मैन मेकिंग थ्रू मॉरल वैल्यूज एंड करेक्टर डेवलपमेंट' नामक लेख में लिखा है कि मानवीय जीवन में नैतिक मूल्यों की स्थापना से मनोबल में वृद्धि होती है यही मनोबल उत्साह बढ़ाता है जिससे संगठनात्मक कुशलता में वृद्धि होती है। (बलवान, 2012)

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र को व्यवहारिक, बोधगम्य एवं समीचीन बनाने के साथ-साथ निम्नलिखित उद्देश्यों को निर्धारित कर शोध को प्रासंगिक बनाने का निहित है-

1. स्वामी विवेकानंद के चिन्तन में सामान्य प्रबंधन को जानना ।
2. स्वामी विवेकानंद के दर्शन में प्रबंधकीय नेतृत्व को जानना ।
3. स्वामी विवेकानंद के चिन्तन में भावनात्मक बुद्धिमता एवं मानवीय संबंध निर्माण कौशल को जानना ।
4. स्वामी विवेकानंद के दर्शन में वतर्मान प्रबंधकीय समस्याओं के समाधान / उपायों का समन्वित अध्ययन करना
5. वर्तमान में स्वामी विवेकानंद के प्रबंधकीय नेतृत्व सबंधी विचारों की उपयोगिता को स्पष्ट करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र को उद्देश्यपूर्ण, समीचीन एवं प्रभावशाली बनाने के लिए ऐतिहासिक अनुसंधान अध्ययन विधि एवं द्वितीयक स्रोतों के आधार पर विभिन्न शोध पत्रिकाओं, पुस्तकों, स्वामी विवेकानंद जी के जीवन पर आधारित साहित्य,

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, July 2024

सरकारी एवं गैर सरकारी प्रकाशनों, विभिन्न सरकारी एवं गैर-सरकारी वेबसाइटों पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में स्वामी विवेकानंद जी के जीवन मूल्यों पर आधारित वैचारिक दर्शन का प्रबंधन एवं नेतृत्व के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में व्यक्तिगत शोध विधि द्वारा स्वामी विवेकानंद जी के विचारों का विस्तृत अध्ययन किया गया है तथा वर्णनात्मक अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया है। शोध पत्र में स्वामी विवेकानंद जी के प्रबंधकीय नेतृत्व संबंधी विचारों का परिचय देकर प्रबंधकीय दक्षता बढ़ाने के दृष्टिकोण से मानवीय मूल्य-आधारित नेतृत्व की प्रासंगिकता को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

स्वामी विवेकानंद एवं नेतृत्व आधारित संगठनात्मक संस्कृति का विकास

भारत में रामकृष्ण मिशन वैश्विक स्तर पर पुरुषों और महिलाओं की समन्वित शक्ति के रूप में संगठन का अनुपम उदाहरण है। भारत में स्वामी विवेकानंद रामकृष्ण मिशन से प्रत्यक्ष संबंध रखते थे। रामकृष्ण मिशन की गतिविधियों संगठनात्मक स्वरूप, संगठनात्मक एवं प्रबंधकीय कौशल पर स्वामी विवेकानंद के विचारों, व्यूहरचनात्मक नियोजन का प्रभाव रहा है। भारत में रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1 मई, 1897 को स्वामी विवेकानंद के मार्गदर्शक स्वामी रामकृष्ण परमहंस द्वारा की गई। स्वामी विवेकानंद के जीवन दर्शन पर समानता, त्याग, प्रेम, परमार्थ का प्रभाव रामकृष्ण मिशन की संगठनात्मक एवं प्रबंधकीय प्रणाली पर व्यापक रहा है। स्वामी विवेकानंद की नेतृत्व शैली पर विचारों की स्वतंत्रता, सामाजिक समानता, सामाजिक- धार्मिक कुरीतियों से परे विचारों की स्वतंत्रता अधीनस्थों की क्षमता में वृद्धि करती है।भारतीय प्रबंधन चिन्तन एवं मानवीय अस्मिता के क्षेत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा, सनातन अवधारणाओं और विचारों का एक श्रेष्ठ समन्वय है। इन विचारों को भारतीय मनीषियों ने वेदों और उपनिषदों में विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया गया है जो प्राचीन भारतीय संस्कृति में व्यक्तित्व की महत्ता को समझने का सबसे समृद्ध स्रोत हैं। **(मोहता, 2012)** आत्म विश्लेषण, मानव स्वभाव, अस्तित्व और मानवीय अस्मिता की अभिव्यक्ति और व्यक्तित्व विकास में उनकी भूमिका अति महत्वपूर्ण विषय है जिनका उपयोग प्रबंधकों द्वारा संगठनात्मक संरचना को सुदृढ़ करने में किया जाता है। नेतृत्व क्षमता का विकास व्यक्तित्व विकास का दार्शनिक स्वरूप भी है। इसके विविध आयाम मानवीय संबंधों की स्थापना में सहायक है। स्वामी विवेकानंद कार्य निष्पादन के उच्च मानकों का निर्धारण करने के साथ साथ अपने साथियों, अनुगामियों की योग्यताओं की पहचान करके उनकी दक्षताओं में वृद्धि का प्रयास करने की मानसिकता रखते थे। स्वामी शुद्धानंद को लिखे गये पत्र में सन् 1897 में स्वामी विवेकानंद लिखते है कि मैं अपने अनुगामियों, साथियों को निरंतर वृद्धिमान / विकसित होते हुए देखना चाहता हूं। स्वामी विवेकानंद ने अन्तरवैयक्तिक सबंधों को प्राथमिकता प्रदान की थी। व्यक्ति में निहित उर्जा और चेतना को विस्तार देने के लिए उन्होंने कहा कि उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक कि लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाये।भारतीय ज्ञान परंपरा और सांस्कृतिक उद्भव के क्षेत्र में स्वामी विवेकानंद आध्यात्मिक नेतृत्वकर्ता एवं समाज सुधारक थे। स्वामी विवेकानंद ने 11 सितंबर 1893 को शिकागो (यूएसए) में आयोजित धर्म संसद में भाग लिया था। स्वामी विवेकानंद ने सन् 1893 में शिकागो में आयोजित धर्म संसद में वैश्विक बंधुत्व के संदेश से संपूर्ण विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, July 2024

उनके उद्बोधन से वहां उपस्थित जनसमूह भारतीय नेतृत्व शैली से प्रभावित हुआ। स्वामी विवेकानंद के वैचारिक चिन्तन को संपूर्ण विश्व में युवाओं के आध्यात्मिक उत्थान की दिशा में महत्वपूर्ण माना जाता है।

कार्मिक प्रबंधन एवं भावनात्मक बुद्धिमता

कार्मिक प्रबंधन की दृष्टि से कर्मचारियों के मनोबल में अभिवृद्धि करने हेतु यथासमय त्याग, कार्य के प्रति समर्पण की भावना और कार्य निष्पादन के लिए वचनबद्धता स्वामी विवेकानंद के जीवन दर्शन का अभिन्न अंग है। भारत सरकार द्वारा प्रतिवर्ष 12 जनवरी को राष्ट्रिय युवा दिवस मनाया जाता है। स्वामी विवेकानंद की जन्मतिथि को आयोजित यह कार्यक्रम प्रतिवर्ष उनके नेतृत्व कौशल एवं प्रबंधकीय प्रभावशीलता में अभिवृद्धि की दिशा में मानव संसाधन प्रबंधकों को प्रेरणा देता है। किसी भी संगठन में अधीनस्थों से कार्य करवाने के लिए उनके भावनात्मक समर्थन और मनोबल की आवश्यकता होती है। भावनात्मक जुडाव और अनुसमर्थन के क्षेत्र में शिकागो धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानंद द्वारा कहा गया 'भाईयों और बहनों' संबोधन इसका एक उदाहरण है। **(मदनमोहन ,2016)** स्वामी विवेकानंद की युवावस्था के समय परतंत्र भारतीय समाज आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित था तथा पुरातन सांस्कृतिक वैभव से निरंतर दूर जा रहा था। ऐसे समय में सांस्कृतिक पुनर्जागरण के पूरोधा बन कर आम भारतीय का मनोबल बढाकर उसे भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं और विरासत से जोड़कर उन्होंने भावनात्मक बुद्धिमत्ता का परिचय दिया। वर्तमान व्यावसायिक संगठनों के प्रबंधकों के प्रशिक्षण में भावनात्मक बुद्धिमता को विशेष महत्व दिया जाता है। स्वामी विवेकानंद का अद्वैत वेदान्त तथा नव्य वेदान्त के माध्यम से प्रबंधकीय चिन्तन का परिष्कार नेतृत्व क्षमता विकसित करने में महत्वपूर्ण है। मूलतः वेदान्त किसी का आलोचक नहीं है वरन् यह मनुष्य की स्वाभाविक शक्तियों, भावनाओं, मानसिक ऊर्जा को विकसित करने पर बल देता है। कार्मिक प्रबंधन की दृष्टि से कर्मचारियों की एकाग्रता, आत्मनिष्ठा, मानसिक उर्जा, मन, वचन और कर्म की शुद्धि मानवीय जीवन में ही नहीं बल्कि व्यावसायिक जीवन मे मनुष्य को जीवन संघर्ष के लिए मानसिक रूप से तैयार करने में महत्वपूर्ण है। वर्तमान वैश्विक बदलते परिदृश्य में व्यावहारिक शिक्षा के क्षेत्र में धार्मिक ग्रंथ एवं उपदेशों का महत्वपूर्ण स्थान है। इस मत के स्वामी विवेकानंद प्रबल समर्थक थे।

विपरीत परिस्थितियों से सीख कर व्यक्तित्व का परिमार्जन करना

आधुनिक प्रबंधकों के लिए और नेतृत्व क्षमता विकसित करने की दृष्टि से स्वामी विवेकानंद को स्वामी शारदानंद ने उन्हें एक बार यह कहते हुए याद किया, "शोक की अवधि समाप्त होने से पहले ही; मुझे नौकरी की तलाश में निकल जाना पड़ा। भूखे-प्यासे और नंगे पांव, मैं दोपहर की चिलचिलाती धूप में एक आवेदन-पत्र हाथ में लिए एक दफ्तर से दूसरे दफ्तर भटकता रहा, एक-दो अंतरंग मित्र जो विपरीत समय में मेरे साथ सहानुभूति रखते थे, कभी-कभी मेरे साथ होते थे। लेकिन हर जगह मेरे सामने दरवाजा बंद कर दिया जाता था। जीवन की वास्तविकता यह है कि निःस्वार्थ सहानुभूति दुनिया में दुर्लभ है - इसमें कमजोर, गरीब लोगों के लिए कोई जगह नहीं है। कमजोर, गरीबों, बेसहारा और दलितों के लिए स्वामीजी की चिंता इन अनुभवों से जुड़ी हुई थी। **(दीप्ति,2017)** इसने उनकी सोच को नवीन आकार

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, July 2024

दिया। आधुनिक प्रबंधन की दृष्टि से उनके जीवन अनुभव सीखने की प्रक्रिया अथवा कार्मिक प्रशिक्षण हेतु महत्वपूर्ण हैं। व्यावसायिक संगठनों में व्याप्त जटिलताओं को व्यावहारिक जीवन के प्रति उनके दृष्टिकोण के माध्यम से हल किया जा सकता है। प्रबंधन से आशय दूसरों से काम लेने की कला ही नहीं है वरन् संस्थानों में प्रबंधन प्रथाओं की गुणवत्ता को भी बेहतर बनाना है।

संगठनात्मक संरचना एवं वैश्वीकरण

संगठनात्मक कुशलता एवं वैशीकरण को सुदृढ करने हेतु स्वामीजी द्वारा बताए गए परोपकारी विचारों के साथ गैर-भौतिक दृष्टिकोण के माध्यम से पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। वैश्वीकरण के संबंध में विवेकानंद का दृष्टिकोण यह है कि वैश्वीकरण सार्वभौमिक मानकों के अनुसार होना चाहिए। स्वामी विवेकानंद ने 04 जुलाई 1902 को बेलूर मठ के एक शांत कमरे में महासमाधि ली थी। यह अल्पकालीन किन्तु यशस्वी जीवन 39 साल 05 माह और 24 दिन का था। स्वामी विवेकानंद का जीवन दर्शन वास्तव में जीवन को व्यवस्थित करने की प्रक्रिया से संबंधित है। वैश्वीकरण वाणिज्य, निवेश, संचार और मानव जीवन संबंधी विचारों के क्षेत्र में राष्ट्रों की एक दूसरे पर निर्भरता से जुड़ा हुआ है। वैश्वीकरण ने न केवल विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच वाणिज्यिक आदान-प्रदान बल्कि अंतर-सांस्कृतिक संबंधों का विकास किया है। संस्कृतिकरण की प्रक्रिया ने भारतीय पारंपरिक संस्कृति में तेजी से सामाजिक परिवर्तन किया है। वैश्वीकरण के परिदृश्य में मनुष्य अगर खुद को अलग-थलग कर ले तो वह अपना जीवन सुगमता से नहीं चला सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी ने भारतीय संस्कृति को वैश्विक परिदृश्य में ला दिया है। भारतीय संस्कृति का आधार दार्शनिक विचार और अध्यात्म है। भारत में वैश्वीकरण सामाजिक व्यवस्था में समन्वित हो गया है, जिससे हमारी मुलभूत संस्कृति में परिवर्तन हो रहा है।

आध्यात्मिक शक्ति का उपयोग एवं विकास

स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार शरीर और मस्तिष्क की प्रवृति को समझना अपेक्षाकृत सरल है। लेकिन आत्मा की प्रवृति गहराई युक्त और सूक्ष्म विश्लेषण पर आधारित है। प्रत्येक मनुष्य में आत्म तत्त्व मूल आधार है और इस आधार को नियंत्रित कर अन्य विषयों को सरलता से नियंत्रित किया जा सकता है। वास्तव में जो मनुष्य अपने मन को जानता है और नियंत्रित करने में सक्षम है, वह शक्तिशाली है। विवेकानंद के अनुसार शरीर और मस्तिष्क का स्वरूप अस्थायी हैं। आत्म तत्त्व ही सनातन रूप से अमर है। **(बलवान,2012)** स्वामी विवेकानंद जी कहते हैं कि मनुष्य बाहर ईश्वर और दिव्यता की तलाश करता है। लेकिन दिव्यता हर आत्मा में निवास करती है। नेतृत्व एवं प्रबंधन की दृष्टि से इस भावना को समझना आवश्यक है। इससे संगठन में सद्भाव कायम होता है। वास्तव में व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए प्रत्येक मनुष्य को सुख और दुख की अवस्था में दोनों से ही सीखने की आवश्यकता है। प्रत्येक मनुष्य का वास्तविक चरित्र जीवन अनुभवों की सामूहिक अभिव्यक्ति होती है। चरित्र आदतों पर निर्भर है। उत्तम चरित्र विकसित करने के लिए अपनी आदतों को ध्यान से देखा जाना चाहिए।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, July 2024

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद जी का जीवन दर्शन यह है कि नकारात्मक भावनाओं को प्रबंधित करके नेतृत्व प्रभावी होता है। सफल नेता अपने अनुयायियों की क्षमता विकसित करके, विश्वास करके उन्हें सशक्त बनाते है। ऐसे नेता दूसरों के व्यक्तित्व को बड़ा करके खुद को बड़ा बनाते हैं। स्वामी विवेकानंद ने 'आदेश और नियंत्रण' के बजाय 'सशक्त और सुविधाजनक विकास के अवसरों का निर्माण' के दर्शन को चुना था। इस प्रक्रिया में पारस्परिक विश्वास एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्वामी विवेकानंद अपने आस-पास के लोगों को उच्च स्तर के प्रदर्शन की आकांक्षा करने के लिए प्रेरित करने का श्रेष्ठ उदाहरण यह है कि सन् 1897 में उन्होंने अपने शिष्य स्वामी शुद्धानंद को पत्र लिखा। वे लिखते हैं, "...अंत में, आपको याद रखना चाहिए कि मैं अपने बच्चों से अपने भाइयों (अपने भाई शिष्यों) से अधिक की अपेक्षा करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरा हर बच्चा मुझसे सौ गुना बड़ा बने। आपमें से हर एक को एक विशाल बनना चाहिए - अवश्य, यह मेरा वचन है। आज्ञाकारिता, तत्परता, और उद्देश्य के प्रति प्रेम - यदि आपके पास ये तीनों हैं, तो कोई भी चीज़ आपको रोक नहीं सकती।स्वामी विवेकानंद जी ने निस्संदेह एक सकारात्मक चिंतन और दर्शन दिया है। रामकृष्ण मिशन सकारात्मक रूप से उत्साहित युवाओं को, उनके दृष्टिकोण को विकसित कर रहा हैं। वैश्विक स्तर पर उनकी सबसे बड़ी विरासत लाखों आत्म प्रेरित लोग हैं जो एक बेहतर राष्ट्र और एक बेहतर दुनिया के निर्माण का सपना देखते हैं। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में मानव संसाधन प्रबंध के क्षेत्र में कर्मचारियों के कौशल में वृद्धि हेतु रामकृष्ण मिशन की संगठनात्मक प्रणाली, उत्कृष्टता, कार्यकुशलता एवं समूह भावना तथा दल निर्माण का उपयोग किया जा सकता है। वित्तीय प्रबंधन के क्षेत्र में भी पारदर्शिता, स्पष्टता एवं ईमानदारी जैसे गुणों का उपयोग रामकृष्ण मिशन के संगठनात्मक संरचना से प्रभावित होकर उपयोग किया जा सकता है। स्वामी विवेकानंद की नेतृत्व शैली Transformational leadership का उत्तम उदाहरण है। सफल नेता के विशिष्ट गुणों की झलक भी स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व एवं जीवन दर्शन में देखी जा सकती है। उत्तम स्वास्थय, तीव्र स्मरण शक्ति, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, नियोजन, संगठन निर्माण एवं संचालन, निर्देशन तथा नियंत्रण कौशल, सामाजिक परिपम्वता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, अधिकार प्रत्यायोजन दक्षता, अधीनस्यों की भूमिका निश्चित करना, समन्वयकारी रणनीति का निर्माण, समस्या समाधान कौशल उनमें प्रमुख है।

संदर्भ

[1]. **राजपूत, प्रमोद कुमार एवं उनियाल, डॉ. मदन मोहन** (2016) **स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दार्शनिक विचारों की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता**. 7 (1), 172-174

[2]. Barman, P., Chattacharya, Dr. D. (2012). Vivekananda's thoughts on mass-making through moral values and character development and its present Talevancy in school education 1(2),30-37

[3]. Gupta R. (2011) swami vivekananda: A comprehensive study, Prabhat Prakashan, New Delhi

[4]. **सारदानन्द, स्वामी (2015) वेदान्त सिद्धान्त एवं व्यवहार (2015th ed., vol.10) रामसा मह, रामकृष्ण भाडाम मार्ग, पन्तोली, नागपुर**

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, July 2024

[5]. **मोहता**, **सत्यप्रकाश** (2012) **स्वामी विवेकानंद के नव्य वेदान्त दर्शन एवं उनके शैक्षिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता** https:// shodhganga.inflibnet.ac.in

[6]. https://vedantasociety.net/vivekananda
[7]. https://ramakrishna.org/vivekananda.html
[8]. https://www.jagranjosh.com/general-knowledge/swami-vivekananda-1547214232-1
[9]. https://www.artic.edu/swami-vivekananda-and-his-1893-speech
[10]. https://belurmath.org/
[11]. https://byjus.com/free-ias-prep/ncert-notes-swami-vivekananda/
[12]. https://www.iimidr.ac.in/wp-content/uploads/Swami-Vivekananda.pdf
[13]. https://www.academia.edu/10241911/Relevance_of_Swami_Vivekananda_s_Thoughts_in_Management_Education_in_the_Changing_Global_Environment
[14]. https://journalofbusiness.org/index.php/GJMBR/article/view/1228
[15]. https://www.researchgate.net/publication/361853853_Translating_Swami_Vivekananda_into_Management_Practice
[16]. https://www.researchgate.net/publication/261136173_Swami_Vivekananda_A_Management_Guru
[17]. https://kalaharijournals.com/resources/Special_Issue_April_02.pdf
[18]. https://rbalu.com/swami-vivekananda-one-of-indias-greatest-leaders/
[19]. https://www.indianjournals.com/ijor.aspx?target=ijor:vbm&volume=1&issue=1&article=001&type=pdf
[20]. www.patrika.com